



Dhritman karak

04 Jun 2015

04:10 PM

Naksalbari

Model: Web-MyKundli

Order No: 121088101

शुद्धभाषण

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

লিঙ্গ _____: পুরুষ
জন্ম তারিখ _____: **04/06/2015**
দিন _____: বৃহস্পতিবার
জন্ম সময় _____: **16:10:00** ঘন্টা
ইন্ট _____: 28:35:46 ঘটা
স্থান _____: **Naksalbari**
রাজ্য _____: West Bengal
দেশ _____: India

অক্ষাংশ _____: 26:42:00 উত্তর
রেখাংশ _____: 88:12:00 পূর্ব
মধ্য রেখাংশ _____: 82:30:00 পূর্ব
স্থানীয় সংস্কার _____: 00:22:48 ঘন্টা
গ্রীষ্ম সংস্কার _____: 00:00:00 ঘন্টা
স্থানীয় সময় শোধন _____: 16:32:48 ঘন্টা
বেলাান্তর _____: 00:01:46 ঘন্টা
সাম্পাতিক কাল _____: 09:23:02 ঘন্টা
সূর্যোদয় _____: 04:43:41 ঘন্টা
সূর্যাস্ত _____: 18:27:22 ঘন্টা
দিনমান _____: 13:43:41 ঘন্টা
সূর্য স্থিতি -অয়ন _____: উত্তরায়ণ
সূর্য স্থিতি -গোল _____: উত্তর
ঋতু _____: গ্রীষ্ম
সূর্য ডিগ্রী _____: 19:26:22 বৃষ
লগ্ন ডিগ্রী _____: 20:42:27 তুলা

অবকহড়া চক্র
লগ্ন-লগ্নাধিপতি _____: তুলা - শুক্র
রাশি-স্বামী _____: ধনু - বৃহস্পতি
নক্ষত্র-চরণ _____: **মুলা - 4**
নক্ষত্র-স্বামী _____: কেতু
যোগ _____: শুভ
করণ _____: গণ
গণ _____: অরি
যোনি _____: শবান
নাড়ী _____: আদ্য
বর্ণ _____: ক্ষত্রিয়
বশ্য _____: মানব
বর্গ _____: মূষক
মুঞ্জ _____: অন্ত্য
হংসক _____: অগ্নি
জন্ম নামাক্ষর _____: ভী-ভীমা
পায়া/রাশি-নক্ষত্র _____: তাম্র - তাম্র
সূর্য রাশি-পাশ্চাত্য _____: মিথুন

পঞ্জিকা

পিতামহের নাম _____ :
বাবার নাম _____ :
মায়ের নাম _____ :
জাতি _____ :
গোত্র _____ :

ক্যালেন্ডার	বর্ষ	মাস	তিথি/প্রবিশ্ট
রাষ্ট্রীয়	শক : 1937	জ্যৈষ্ঠ	14
পাঞ্জাবী	সম্বৎ : 2072	জ্যৈষ্ঠ	21
বাংলা	সন্ : 1422	জ্যৈষ্ঠ	20
তামিল	সম্বৎ : 2072	বৈকাশী	21
কেরালা	কোল্লম : 1190	ঈদম্	21
নেপালী	সম্বৎ : 2072	জ্যৈষ্ঠ	21
চৈত্রাদি	সম্বৎ : 2072	আষাঢ়	কৃষ্ণ 2
কার্তিকাদি	সম্বৎ : 2072	জ্যৈষ্ঠ	কৃষ্ণ 2

পঞ্জিকা

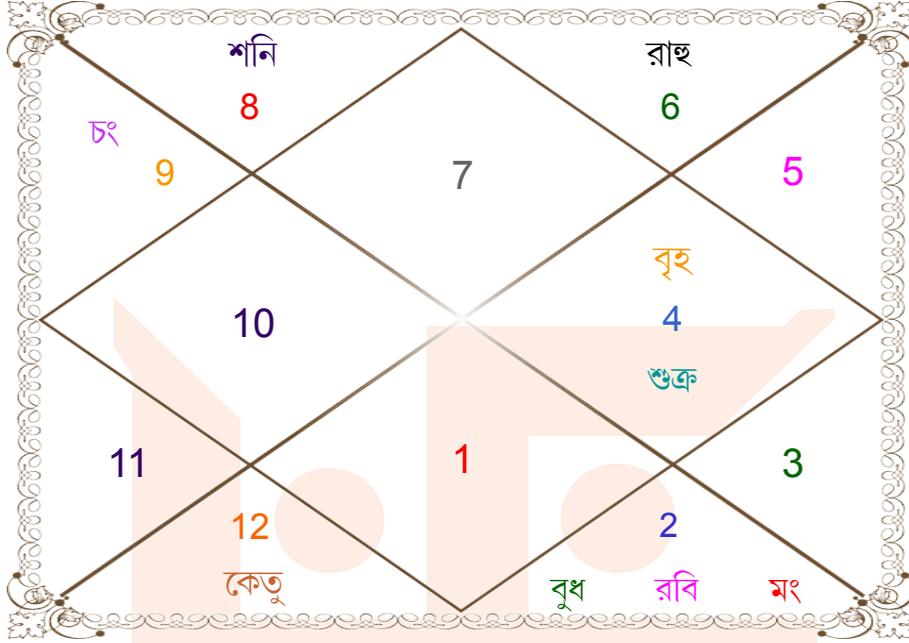
সূর্যোদয় কালীন তিথি _____ : 2
তিথির সমাপ্তিকালীন _____ : 19:48:21
জন্ম তিথি _____ : 2
সূর্যোদয় কালীন নক্ষত্র _____ : মূলা
নক্ষত্র সমাপ্ত কাল _____ : 19:21:57 ঘন্টা
জন্মকালীন যোগ _____ : মূলা
সূর্যোদয় কালীন যোগ _____ : শুভ
যোগ সমাপ্ত কাল _____ : 25:31:15 ঘন্টা
জন্মকালীন যোগ _____ : শুভ
সূর্যোদয় কালীন করণ _____ : তৈতিল
করণ সমাপ্ত কাল _____ : 08:28:03 ঘন্টা
জন্মকালীন করণ _____ : গণ
ভয়ৎ _____ : 50:50:48
ভাবক _____ : 58:50:41
ভোগ্য দশা _____ : কেতু 0 ব 11 মা 15 দি

ঘাত চক্র

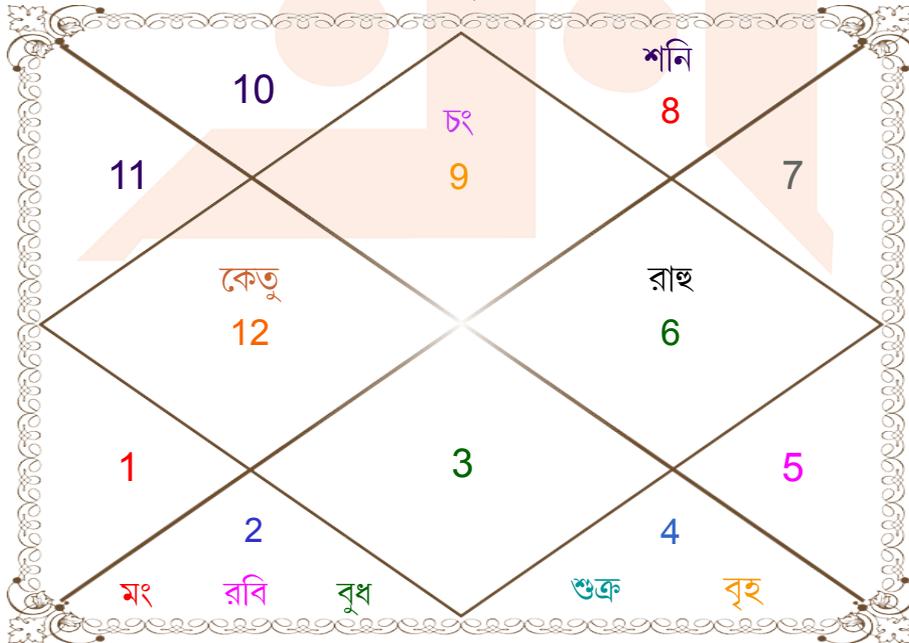
মাস _____ : শ্রাবণ
তিথি _____ : 3-8-13
দিন _____ : শুক্রবার
নক্ষত্র _____ : ভরণী
যোগ _____ : বজ্র
করণ _____ : তৈতিল
প্রহর _____ : 1
বর্গ _____ : মার্জার
লগ্ন _____ : ধনু
সূর্য _____ : তুলা
চন্দ্র _____ : মীন
মঙ্গল _____ : বৃশ্চিক
বুধ _____ : সিংহ
বৃহস্পতি _____ : ধনু
শুক্র _____ : কুম্ভ
শনি _____ : কন্যা
রাহু _____ : কুম্ভ

জন্ম কুন্ডলী

নগ্ন কুন্ডলী



চন্দ্র কুন্ডলী



লগ্ন কুন্ডলী ঔর দশা

লগ্ন কুন্ডলী

কেতু		বুধ রবি মং	
			শুক্র বৃহ
চং	শনি	লং	রাহু

লগ্ন কুন্ডলী

বুধ মং রবি		কেতু
শুক্র বৃহ		
রাহু	লং	শনি চং

বিংশোত্তরী

কেতু 0ব 11মা 15দি
কেতু

04/06/2015

20/05/2129

কেতু	19/05/2016
শুক্র	19/05/2036
রবি	20/05/2042
চন্দ্র	19/05/2052
মঙ্গল	20/05/2059
রাহু	19/05/2077
বৃহস্পতি	19/05/2093
শনি	20/05/2112
বুধ	20/05/2129

য়োগিনী

উলকা 0ব 9মা 26দি
সঙ্কটা

31/03/2023

31/03/2031

সঙ্কটা	08/01/2025
মঙ্গলা	30/03/2025
পিঙ্গলা	09/09/2025
ধান্যা	10/05/2026
ভ্রামরী	31/03/2027
ভদ্রিকা	10/05/2028
উলকা	09/09/2029
সিদ্ধা	31/03/2031

গ্রহের ডিগ্রী এবং তার অবস্থান

গ্রহ	ব	অ	রাশি	ডিগ্রী	গতি	নক্ষত্র	পদ	সংখ্যা	রা	ন	অ.	স্থিতি
লং			তুলা	20:42:27	311:43:03	বিশাখা	1	16	শুক্র	বৃহ	বৃহ	---
রবি			বৃষ	19:26:22	00:57:26	রোহিণী	3	4	শুক্র	চং	বুধ	শত্রুরাশি
চং			ধনু	11:30:30	13:40:33	মূলা	4	19	বৃহ	কেতু	বুধ	সমরাশি
মং		অ	বৃষ	22:12:43	00:41:20	রোহিণী	4	4	শুক্র	চং	শুক্র	সমরাশি
বুধ		ব	অ	বৃষ	12:22:59	রোহিণী	1	4	শুক্র	চং	রাহু	মিত্ররাশি
বৃহ			কর্ক	23:02:40	00:08:46	অশ্লেষা	2	9	চং	বুধ	চং	উচচস্থ
শুক্র			কর্ক	04:45:32	00:58:30	পুষ্যা	1	8	চং	শনি	শনি	শত্রুরাশি
শনি		ব	বৃশ্চি	06:39:11	00:04:18	অনুরাধা	1	17	মং	শনি	বুধ	শত্রুরাশি
রাহু		ব	কন্যা	13:35:04	00:10:19	হস্তা	2	13	বুধ	চং	রাহু	মূলত্রিকোণ
কেতু		ব	মীন	13:35:04	00:10:19	উ ভাদ্রপদ	4	26	বৃহ	শনি	রাহু	মূলত্রিকোণ
ইউ			মীন	25:22:31	00:02:19	রেবতী	3	27	বৃহ	বুধ	রাহু	---
নেপ			কুম্ভ	15:43:38	00:00:16	শতভিষা	3	24	শনি	রাহু	শুক্র	---
প্লু		ব	ধনু	20:56:27	00:01:13	পূর্বাষাঢ়া	3	20	বৃহ	শুক্র	বৃহ	---
দশম ভাব			কর্ক	24:15:00	--	অশ্লেষা	--	9	চং	বুধ	রাহু	--

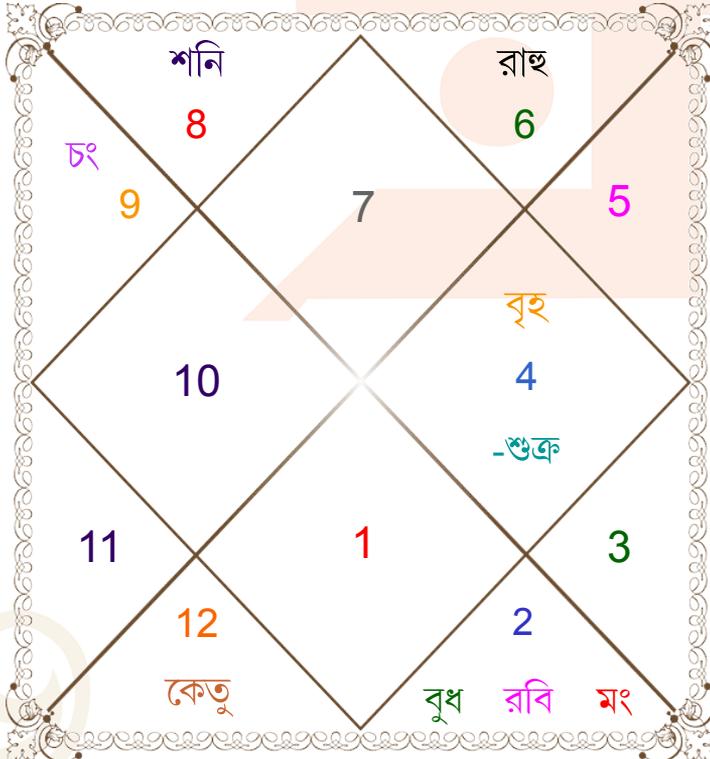
ব - বক্রী স - স্থির

অ - অস্ত পূ - পূর্ণ অস্ত

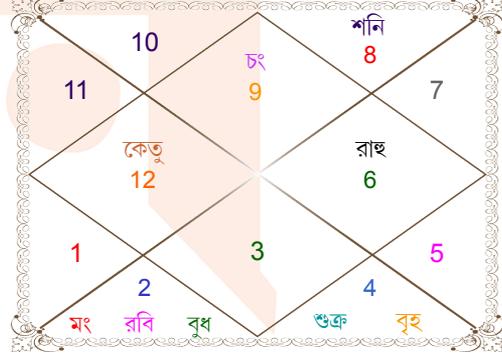
রাহু : স্পর্শ

লাহিড়ী অয়নাংশ : 24:04:22

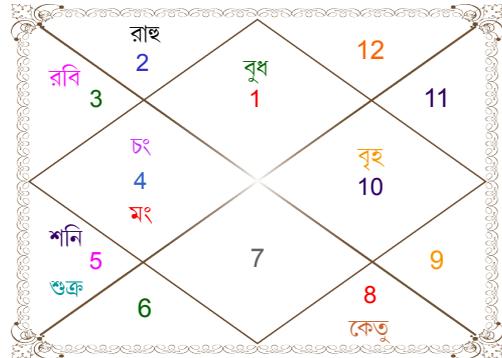
লগ্ন চলিত



চন্দ্র কুন্ডলী



নবাংশ কুন্ডলী



চলিত এবং নিরয়ন ভাব চলিত

চলিত ডিগ্রী

ভাব	ভাব সন্ধি	ভাব মধ্য
1	তুলা	06:17:52
2	বৃশ্চিক	06:17:52
3	ধনু	07:28:44
4	মকর	08:39:35
5	কুম্ভ	08:39:35
6	মীন	07:28:44
7	মেঘ	06:17:52
8	বৃষ	06:17:52
9	মিথুন	07:28:44
10	কর্কট	08:39:35
11	সিংহ	08:39:35
12	কন্যা	07:28:44

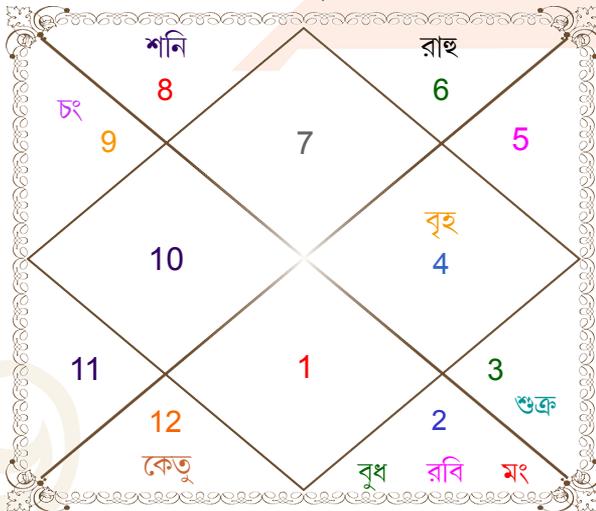
নিরয়ন ভাব চলিত

ভাব	রাশি	ডিগ্রী
1	তুলা	20:42:27
2	বৃশ্চিক	20:01:18
3	ধনু	21:21:19
4	মকর	24:15:00
5	কুম্ভ	26:32:53
6	মীন	25:36:01
7	মেঘ	20:42:27
8	বৃষ	20:01:18
9	মিথুন	21:21:19
10	কর্কট	24:15:00
11	সিংহ	26:32:53
12	কন্যা	25:36:01

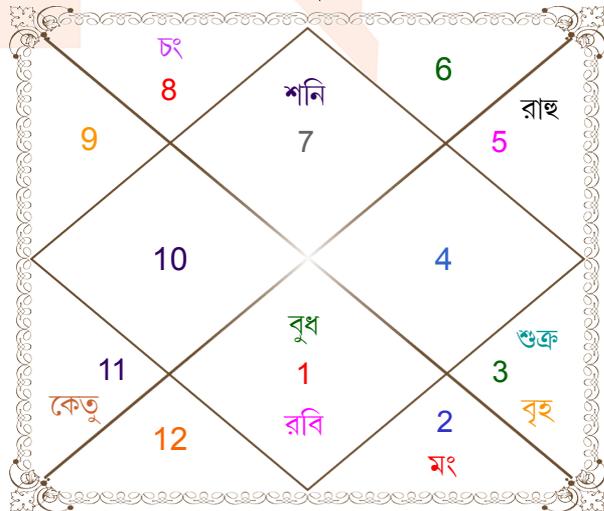
তারা চক্র

জন্ম	সম্পত	বিপত	ক্ষেম	প্রত্যারি	সাধক	বধ	মিত্র	অতিমিত্র
মূলা	পূর্বাষাঢ়া	উত্তরাষাঢ়া	শ্রবণা	ধনিষ্ঠা	শতভিষা	পূ ভাদ্রপদ	উ ভাদ্রপদ	রেবতী
অশ্বিনী	ভরণী	কৃত্তিকা	রোহিণী	মৃগশিরা	আর্দ্রা	পুনর্বসু	পুষ্যা	অশ্লেষা
মঘা	পূ ফাল্গুনী	উ ফাল্গুনী	হস্তা	চিত্রা	স্বাতি	বিশাখা	অনুরাধা	জ্যেষ্ঠা

চলিত কুন্ডলী



ভাব কুন্ডলী



বিংশোত্তরী দশা

ভোগ্য দশা : কেতু 0 বর্ষ 11 মাস 15 দিন

কেতু 7 বর্ষ	শুক্র 20 বর্ষ	রবি 6 বর্ষ	চং 10 বর্ষ	মং 7 বর্ষ
04/06/2015	19/05/2016	19/05/2036	20/05/2042	19/05/2052
19/05/2016	19/05/2036	20/05/2042	19/05/2052	20/05/2059
00/00/0000	শুক্র 19/09/2019	রবি 06/09/2036	চং 20/03/2043	মং 15/10/2052
00/00/0000	রবি 18/09/2020	চং 07/03/2037	মং 19/10/2043	রাহু 03/11/2053
00/00/0000	চং 20/05/2022	মং 13/07/2037	রাহু 19/04/2045	বৃহ 10/10/2054
00/00/0000	মং 20/07/2023	রাহু 07/06/2038	বৃহ 19/08/2046	শনি 18/11/2055
00/00/0000	রাহু 19/07/2026	বৃহ 26/03/2039	শনি 19/03/2048	বুধ 15/11/2056
00/00/0000	বৃহ 19/03/2029	শনি 07/03/2040	বুধ 19/08/2049	কেতু 13/04/2057
00/00/0000	শনি 19/05/2032	বুধ 12/01/2041	কেতু 20/03/2050	শুক্র 13/06/2058
04/06/2015	বুধ 20/03/2035	কেতু 19/05/2041	শুক্র 18/11/2051	রবি 19/10/2058
বুধ 19/05/2016	কেতু 19/05/2036	শুক্র 20/05/2042	রবি 19/05/2052	চং 20/05/2059

রাহু 18 বর্ষ	বৃহ 16 বর্ষ	শনি 19 বর্ষ	বুধ 17 বর্ষ	কেতু 7 বর্ষ
20/05/2059	19/05/2077	19/05/2093	20/05/2112	20/05/2129
19/05/2077	19/05/2093	20/05/2112	20/05/2129	05/06/2135
রাহু 30/01/2062	বৃহ 08/07/2079	শনি 22/05/2096	বুধ 17/10/2114	কেতু 17/10/2129
বৃহ 25/06/2064	শনি 18/01/2082	বুধ 30/01/2099	কেতু 14/10/2115	শুক্র 17/12/2130
শনি 02/05/2067	বুধ 25/04/2084	কেতু 11/03/2100	শুক্র 14/08/2118	রবি 23/04/2131
বুধ 18/11/2069	কেতু 01/04/2085	শুক্র 12/05/2103	রবি 20/06/2119	চং 23/11/2131
কেতু 06/12/2070	শুক্র 01/12/2087	রবি 23/04/2104	চং 19/11/2120	মং 20/04/2132
শুক্র 06/12/2073	রবি 18/09/2088	চং 22/11/2105	মং 16/11/2121	রাহু 08/05/2133
রবি 31/10/2074	চং 18/01/2090	মং 01/01/2107	রাহু 04/06/2124	বৃহ 14/04/2134
চং 01/05/2076	মং 25/12/2090	রাহু 07/11/2109	বৃহ 10/09/2126	শনি 24/05/2135
মং 19/05/2077	রাহু 19/05/2093	বৃহ 20/05/2112	শনি 20/05/2129	বুধ 05/06/2135

❖ উপরোক্ত দশা চন্দ্রের অংশ আধারিত । ভয়াত ভভোগ আধারিত দশা ভোগ্যকাল কেতু ০ ব ১১ মা ১৩ দি হয় ।

❖ উপরোক্ত তিথি দশা সমাপ্তির সময় । বিংশোত্তরী দশা পুরো ১২০ বর্ষের বর্গিত, আয়ুনির্ণয় ব্যতীত ।

বিংশোত্তরী দশা - প্রত্যন্তর

শুক্র - রাহু		শুক্র - বৃহ		শুক্র - শনি		শুক্র - বুধ		শুক্র - কেতু	
20/07/2023		19/07/2026		19/03/2029		19/05/2032		20/03/2035	
19/07/2026		19/03/2029		19/05/2032		20/03/2035		19/05/2036	
রাহু	31/12/2023	বৃহ	26/11/2026	শনি	19/09/2029	বুধ	13/10/2032	কেতু	14/04/2035
বৃহ	25/05/2024	শনি	30/04/2027	বুধ	01/03/2030	কেতু	12/12/2032	শুক্র	24/06/2035
শনি	15/11/2024	বুধ	15/09/2027	কেতু	08/05/2030	শুক্র	03/06/2033	রবি	15/07/2035
বুধ	19/04/2025	কেতু	10/11/2027	শুক্র	17/11/2030	রবি	24/07/2033	চং	20/08/2035
কেতু	22/06/2025	শুক্র	21/04/2028	রবি	14/01/2031	চং	19/10/2033	মং	14/09/2035
শুক্র	21/12/2025	রবি	08/06/2028	চং	20/04/2031	মং	18/12/2033	রাহু	16/11/2035
রবি	14/02/2026	চং	29/08/2028	মং	26/06/2031	রাহু	22/05/2034	বৃহ	12/01/2036
চং	17/05/2026	মং	24/10/2028	রাহু	17/12/2031	বৃহ	07/10/2034	শনি	20/03/2036
মং	19/07/2026	রাহু	19/03/2029	বৃহ	19/05/2032	শনি	20/03/2035	বুধ	19/05/2036
রবি - রবি		রবি - চং		রবি - মং		রবি - রাহু		রবি - বৃহ	
19/05/2036		06/09/2036		07/03/2037		13/07/2037		07/06/2038	
06/09/2036		07/03/2037		13/07/2037		07/06/2038		26/03/2039	
রবি	25/05/2036	চং	21/09/2036	মং	15/03/2037	রাহু	31/08/2037	বৃহ	16/07/2038
চং	03/06/2036	মং	02/10/2036	রাহু	03/04/2037	বৃহ	14/10/2037	শনি	31/08/2038
মং	09/06/2036	রাহু	29/10/2036	বৃহ	20/04/2037	শনি	05/12/2037	বুধ	11/10/2038
রাহু	26/06/2036	বৃহ	22/11/2036	শনি	10/05/2037	বুধ	21/01/2038	কেতু	29/10/2038
বৃহ	10/07/2036	শনি	21/12/2036	বুধ	28/05/2037	কেতু	09/02/2038	শুক্র	16/12/2038
শনি	28/07/2036	বুধ	16/01/2037	কেতু	05/06/2037	শুক্র	05/04/2038	রবি	31/12/2038
বুধ	12/08/2036	কেতু	27/01/2037	শুক্র	26/06/2037	রবি	21/04/2038	চং	24/01/2039
কেতু	18/08/2036	শুক্র	26/02/2037	রবি	02/07/2037	চং	19/05/2038	মং	10/02/2039
শুক্র	06/09/2036	রবি	07/03/2037	চং	13/07/2037	মং	07/06/2038	রাহু	26/03/2039
রবি - শনি		রবি - বুধ		রবি - কেতু		রবি - শুক্র		চং - চং	
26/03/2039		07/03/2040		12/01/2041		19/05/2041		20/05/2042	
07/03/2040		12/01/2041		19/05/2041		20/05/2042		20/03/2043	
শনি	20/05/2039	বুধ	20/04/2040	কেতু	19/01/2041	শুক্র	19/07/2041	চং	14/06/2042
বুধ	08/07/2039	কেতু	08/05/2040	শুক্র	09/02/2041	রবি	06/08/2041	মং	02/07/2042
কেতু	28/07/2039	শুক্র	29/06/2040	রবি	16/02/2041	চং	06/09/2041	রাহু	16/08/2042
শুক্র	24/09/2039	রবি	14/07/2040	চং	26/02/2041	মং	27/09/2041	বৃহ	26/09/2042
রবি	12/10/2039	চং	09/08/2040	মং	06/03/2041	রাহু	21/11/2041	শনি	13/11/2042
চং	10/11/2039	মং	27/08/2040	রাহু	25/03/2041	বৃহ	09/01/2042	বুধ	26/12/2042
মং	30/11/2039	রাহু	13/10/2040	বৃহ	11/04/2041	শনি	08/03/2042	কেতু	13/01/2043
রাহু	21/01/2040	বৃহ	23/11/2040	শনি	01/05/2041	বুধ	28/04/2042	শুক্র	05/03/2043
বৃহ	07/03/2040	শনি	12/01/2041	বুধ	19/05/2041	কেতু	20/05/2042	রবি	20/03/2043

শুভাশুভ জ্ঞান

শুভাশুভজ্ঞান আপনাকে নিজের মিত্র এবং শত্রু সম্বন্ধে সজাগ করায়। মূলাক্ষ, ভাগ্যাক্ষ এবং মিত্রাঙ্কর সহিত মিত্রতা এবং অংশীদারি করলে লাভ তথা সহযোগ প্রাপ্তি হবে। শুভ দিন এবং বর্ষ উন্নতি কারক তথা শুভ গ্রহের দশা লাভদায়ক। সেরূপ মিত্রলগ্ন এবং মিত্ররাশির ঘনিষ্ঠতা লাভদায়ক।

শুভরত্ন, শুভ ধাতু এবং শুভ রং ধারণ করলে শারীরিক এবং মানসিক সুস্থতা থাকে, ভাগ্য রত্ন ধারণ করলে সৌভাগ্য বৃদ্ধি হয়। শুভ সময়ে কার্য প্রারম্ভ করলে সফলতা প্রাপ্তি হয়। সাথে-সাথে ইন্টদেবের ধ্যান এবং জপ মানসিক শান্তি তথা সফলতা প্রদান করে। শুভ পদার্থ-অন্ন, দ্রব্য ইত্যাদির দান অথবা ব্যবসায় শুভ দিকে শুরু করলে বাঞ্ছিত ফললাভ প্রাপ্ত হয়। এইরূপ শুভাশুভজ্ঞানের দৈনন্দিন জীবনে প্রয়োগ শুভফলদায়ক।

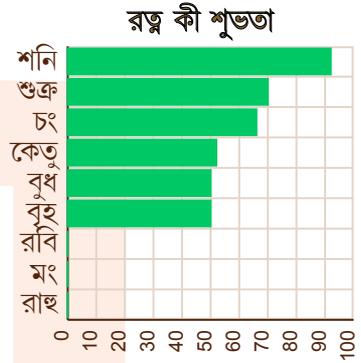
মূলাক্ষ	4
ভাগ্যাক্ষ	9
মিত্র অক্ষ	1, 4, 6, 9
শত্রু অক্ষ	3, 7, 8
শুভ বর্ষ	22,31,40,49,58
শুভ দিন	শনি, বুধ, শুক্র
শুভ গ্রহ	শনি, বুধ, শুক্র
মিত্র রাশি	মীন, সিংহ
মিত্র লগ্ন	মকর, মিথুন, সিংহ
অনুকূল দেবতা	হনুমান
শুভ রত্ন	হীরা
শুভ উপরত্ন	জারকন, সোনালী হকীক
ভাগ্য রত্ন	পান্না
শুভ ধাতু	রৌপ্য
শুভ রং	রজত
শুভ দিক্	দক্ষিণপূর্ব
শুভ সময়	সূর্যোদয়
দান পদার্থ	মিশ্রি, দধি, শেবতচন্দন
দান অন্ন	চাউল
দান দ্রব্য	দুধ

রত্ন চয়ন

রত্ন জীবন মেং শুভত্ব কী বৃদ্ধি কে লিএ ধারণ কিএ জাতে হৈং। বৈজ্ঞানিক রূপ সে, রত্ন অপনে গৃহ কী রাশিযোং কো পর্ণমাাত্রা মেং মানব শরীর মেং প্রবাহিত কর গৃহ প্রভাব কী বৃদ্ধি করতে হৈং। যही कारण है कि रत্ন केवल शुभ ग्रहोएं का ही धारण किया जाता है। गृह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रोएं की फति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नां में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत্ন चयन हेतु गृह की शुभता दशांते है।

नीचे जन्मकण्डली में ग्रहोएं की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही केटोन सा गृह किस त्त्रे में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नोएं की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस गृह को १५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसको रत্ন हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिसे ५०-१५ प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसे कार्य त्त्रे अनूसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत্ন केवल २५-५० प्रतिशत शुभता लिए है उनको रत্ন केवल उनकी या उनको मित्रोएं की दशा में धारण करने चाहिए। अस्तंतः जिसे २५ प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे गृह अपने लिए अशुभ ही समरों नर उनको रत्नोएं को पहनने से बचना चाहिए।

रत্ন	गृह	शुभता	क्षेत्र
नीला	शनि	92%	धन, सुख, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	70%	व्यवसायिक उन्नति, दुर्घटना एड़ानो, स्वास्थ्य
मुज्जा	चं	66%	परक्रम, व्यवसायिक उन्नति
वैदूर्यमनि	केतु	52%	शत्रु एवं रोग मुक्ति, व्यवसायिक उन्नति
पान्ना	बुध	50%	दुर्घटना एड़ानो, भाग्योदय, कम खरच
पोखराज	बृह	50%	व्यवसायिक उन्नति, परक्रम, शत्रु एवं रोग मुक्ति
माणिक्य	रवि	0%	दुर्घटना, हानि
प्रवाल	मं	0%	दुर्घटना, दाम्पता कण्ट, धन हानि
गोमेद	राह	0%	व्यय, दुर्घटना



दशानुसार रत্ন विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मुज्जा	प्रवाल	पान्ना	पोखराज	हीरा	नीला	गोमेद	वैदूर्यमनि
केतु	19/05/2016	0%	53%	0%	50%	50%	77%	80%	0%	64%
शुक्र	19/05/2036	0%	53%	0%	56%	50%	83%	98%	10%	58%
रवि	20/05/2042	25%	72%	0%	50%	56%	58%	80%	0%	29%
चं	19/05/2052	12%	78%	0%	56%	50%	70%	92%	0%	29%
मं	20/05/2059	12%	72%	12%	25%	56%	70%	92%	0%	58%
राह	19/05/2077	0%	53%	0%	50%	50%	77%	98%	23%	29%
बृह	19/05/2093	12%	72%	0%	25%	62%	58%	92%	0%	52%
शनि	20/05/2112	0%	53%	0%	56%	50%	77%	100%	10%	29%
बुध	20/05/2129	12%	53%	0%	62%	50%	77%	92%	0%	52%

সাড়েসাতী বিচার

শনির সাড়েসাতীর প্রভাব দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের সাহায্যে কমানো সম্ভব। রত্ন পরিধান করার পূর্বে দুধ ও গঙ্গাজলে পরিষ্কার করে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে। শনি দ্বাদশ, প্রথম এবং দ্বিতীয় স্থান অতিক্রম করলে তবেই কোন জন্মকুণ্ডলীতে সাড়েসাতীর প্রভাব পরিলক্ষিত হয়। শনি নাটাল চন্দ্রের চতুর্থ ও অষ্টম স্থান অতিক্রম করার ফলে ঠেয়ার প্রভাব দেখা যায়। সাড়েসাতীর প্রভাব বিদ্যমান হয় সাড়ে সাত বছর এবং ঠেয়ার প্রভাব বিদ্যমান হয় আড়াই বছর। সাধারণতঃ এটি শরীর, মানসিক শাস্তি এবং অর্থনৈতিক অবস্থা বিঘ্নিত করে।

সাধারণতঃ সাড়েসাতী যে কোনো জন্মকুণ্ডলী তিনবার পরিভ্রমণ করে প্রথম-বাল্যকালে দ্বিতীয়-যৌবনকালে তৃতীয় - বৃদ্ধ বয়সে, প্রথম সাড়েসাতী শিক্ষা ও পিতা মাতাকে প্রভাবিত করে। দ্বিতীয় সাড়েসাতী জীবিকা অর্থ এবং পারিবারকে প্রভাবিত করে। শেষ সাড়েসাতী স্বাস্থ্যকে প্রভাবিত করে।

নিম্ন লিখিত সারণীতে সাড়েসাতীর পর্যায় এবং তার প্রভাব বর্ণিত হল।

প্রথম চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	04/06/2015-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

দ্বিতীয় চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

তৃতীয় চক্র

সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

শনির ঠেয়া ফল

ঠেয়ার প্রকার	ফল	ক্ষেত্র
সাড়েসাতী প্রথম ঠেয়া	অশুভ	ধন
সাড়েসাতী দ্বিতীয় ঠেয়া	শুভ	পরাক্রম
সাড়েসাতী তৃতীয় ঠেয়া	শুভ	সুখ
চতুর্থ স্থানস্থ ঠেয়া	শুভ	শত্রু এবং রোগ
অষ্টম স্থানস্থ ঠেয়া	সম	ব্যবসায়িক অসুবিধা

সাড়েসাতীর উপায়

দান পূজা অনাহার এবং মন্ত্র উচ্চারণের মাধ্যমে সাড়েসাতীর প্রভাব সীমিত করা সম্ভব। দান সামগ্রীর মধ্যে কালো বস্ত্র কালো কলাই, চামড়ার জুতো, শস্য দানা ইত্যাদি উল্লেখ যোগ্য। শনিবার অনাহার করে শনির পূজা করা উচিত এবং পরে গম, গমের আটা, ফল, কালো নুন, কালো কলাই ইত্যাদি আহার করা উচিত। শনিবার নিজে অথবা ব্রাহ্মণের মাধ্যমে ১৯০০০ বার।

ॐ প্রাং প্রং প্রৌং সঃ শনৈশ্চরায় নমঃ ।।

মন্ত্র, উচ্চারণ করা দরকার স্বাস্থ্য মানসিক শান্তি, পরিবারের সুখ, অর্থ এবং জীবিকার উপর সাড়েসাতীর শুভপ্রভাব লাভের জন্য মহামৃত্যুঞ্জয় মন্ত্র উচ্চারণ করলে সুফল পাওয়া যেতে পারে। ১২৫০০০ বার এই মন্ত্রটি উচ্চারণ করতে হবে।

ॐ ত্রযংবকম যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্ধনম্।

উবার্হকমিব বন্ধনাম্মৃত্যোর্মুক্ষীয় মা মৃতাত।।

রত্ন পরিধানের পূর্বে এটি দুধ এবং গঙ্গাজলে ধুয়ে ধূপ জালিয়ে পূজা এবং ১০৮ বার মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে।

ॐ হোং জুং স ॐ ভূর্ভুব স্ব ॐ।।

শনির সাড়েসাতীর শুভত্ব যাড়ানোর জন্য শনি যারের দিন আপনি ঘোড়ার নাল বা নৌকার পেরেক দিয়ে তৈরী লোহার আংটা ধারণ করুন। আপনি নীলা বস্ত্র যাহিষ্কার করুন, কারণ শনি আপনার ঠিকুজীতে যোগকারক গ্রহ নয়। লোহার আংটা ডানহাতে মধ্যমা আঙুলে ধারণ করুন।

শনিবার শুক্ল পক্ষে সূর্যোৎস-র পূর্বে রত্ন পরিধানের শুভ সময়। এদিন পুষ-্যা, অনুরাধা, উত্তরা ভাদ্রপদ নক্ষত্র গুলি শুভ। শনিবার উপোস থাকা জরুরি।

ॐ শং শনৈশ্চরায় নম ।

অঙ্গুষ্ঠী ধারণ করলে শনির বস্ত্র দান করা উচিত। শনির অশুভ প্রভাব কম হবে তথা আপনার সুখ শান্তি এবং সমৃদ্ধি বৃদ্ধি হবে। ডড্রডশডড্রডশশ্রী হনুমান চালীসা এবং শ্রী হনুমান অষ্টক পাঠ করা শ্রেষ্ঠ।

ईर्ष्या “किर्ति”

जब वर या कन्या की कुंडली में मङ्गल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो माङ्गलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तृविनाशश्च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

यदि जातक जातिकार कुष्ठिते मङ्गल गृह चतुर्थ घर, सप्तम घर, अष्टम घर वा द्वादश घरे स्थित হয় তবে এটাকে মাঙ্গলিক দোষ বলা হয়। মঙ্গল চন্দ্রের সংগে যুক্ত হয়ে প্রবল হয়। যদি শাস্ত্রানুসারে জাতক ও জাতিকা মাঙ্গলিক দোষমুক্ত হয় তবে তারা সুখে নিশ্চিন্তে বৈবাহিক জীবন যাপন করবেন। অন্যদিকে যদি তারা এই দোষমুক্ত না হয় তবে তারা অযথা বাধা ও সমস্যার সম্মুখীন হয়। সুতরাং পুরুষ ও মহিলা উভয়েরই বৈবাহিক জীবন শুরু করার পূর্বে উভয়ের কুষ্ঠিকে ভাল ভাবে বিচার করা উচিত। মাঙ্গলিক দোষ ভালভাবে মুক্ত করার পরে তারা শান্তিপূর্ণ বৈবাহিক জীবন যাপন করতে পারবেন।

আপনার জন্মকালে আপনার চন্দ্র সারণীতে মঙ্গলের অবস্থান অষ্টম গৃহে ছিল। অর্থাৎ আপনি মাঙ্গলিক। কিন্তু শাস্ত্রমতে এই দোষ হইতে মুক্ত অর্থাৎ আপনি ক্ষতিকর হইতে হিতকর ফল অধিক পাইবেন। আপনি স্বাস্থ্য ভালো রাখিবেন এবং সামঞ্জস্যপূর্ণ এবং ঝুঁকিপূর্ণ প্রয়াসে সফল হইবেন। কিন্তু আপনার স্ত্রী সময়ে সময়ে শারীরিকভাবে অসুস্থ হইতে পারেন। আপনার উচ্চশিক্ষা হইবে। আপনার ভ্রাতা ও ভগিনীগণ আপনাকে আন্তরিক সমর্থন করিবেন। আপনার জীবন ঐশ্বর্য এবং বিলাসপূর্ণ হইবে।

যদিও মঙ্গল আপনার ক্ষেত্রে হিতকর, ইহার প্রভাবে আপনার বিবাহ বিলম্বিত হইবে। কিন্তু বিবাহের উৎসব সুখপ্রদ ও উপভোগ্য পরিবেশে হইবে। যদিও আপনার বিবাহোত্তর জীবন শান্তিপূর্ণ হইবে কিন্তু আপনার স্ত্রীর শারীরিক সমস্যা থাকিবে। আপনার প্রধান কাজগুলির মধ্যে অধিকাংশ সাফল্যসহ সমাপ্ত হইবে এবং আপনার বৈবাহিক জীবন শান্তিপূর্ণ হইবে। আপনার রাশিচক্রে মঙ্গল অষ্টম গৃহে অবস্থিত অর্থাৎ আপনার ব্যবসায়, সমাজ এবং সামাজিক ও পারিবারিক কাজ সম্পূর্ণ হইবে।

মঙ্গলের দৃষ্টি একাদশ গৃহে বিদ্যমান অর্থাৎ আপনি ব্যবসায় আকাঙ্ক্ষিত লাভ পাইবেন এবং অর্থবান হইবেন। মঙ্গলের দৃষ্টি দ্বিতীয় গৃহেও বিদ্যমান অর্থাৎ আপনি বিনাবাধায় শিক্ষা সম্পূর্ণ করিবেন। সাংসারিক পরিবেশ শান্তিপূর্ণ এবং উত্তেজনামুক্ত হইবে। তৃতীয় গৃহে মঙ্গলের দৃষ্টি ইংগিত করে যে আপনার সাহসিকতা বৃদ্ধি পাইবে। আপনার ভাতৃ ও ভগিনীগণ আপনার সহায়ক হইবেন অর্থাৎ মঙ্গলের হিতকর প্রভাবে আপনার জীবন সাবলীল হইবে।

আপনার জীবন সুখকর করিতে আপনি অমাঙ্গলিক পাত্রী অথবা দোষমুক্ত মাঙ্গলিক পাত্রী বিবাহ করিবেন। এই ব্যাপারে আপনার বৈবাহিক জীবন শান্তিপূর্ণ হইবে। আপনি সমাজে ধনবান এবং বিখ্যাত হইবেন। আপনার সামাজিক মহলে আপনি সম্মানীয় মর্যাদা সম্পন্ন হইবেন।

যদি পাত্রীর রাশি চক্রে মঙ্গল অষ্টম গৃহে অবস্থিত হয়, তাহা হইলে বিবাহ পরিহার করিবেন, কারণ যদি মঙ্গল দুই রাশি চক্রেই অভিন্ন গৃহে থাকে তাহা আপনাদের দুজনের পক্ষেই ক্ষতিকর এবং ভিন্ন

গৃহে থাকিলে হিতকর হইবে। মঙ্গলের হিতকর প্রভাবে আপনি আপনার অধিকাংশ প্রধান ঝুঁকিপূর্ণ প্রয়াসেই সফল হইবেন অর্থাৎ বিবাহের পূর্বে রাশিচক্র ভালোভাবে পরীক্ষা করিয়া লইবেন।



কালসর্প যোগ

অগ্নে রাহুরথ কেতু সর্বে মধ্যগতা গৃহা।
যোগা যং কালসর্পাখ্যো শীঘ্রং তং তু বিনাশয।।

রাহু এবং কেতু গৃহের মধ্যে বাকি সমস্ত সাত গৃহ বিদ্যমান থাকলে, কালসর্প যোগ গঠিত হয়। এই কালসর্প যোগের অশুভ ফল থেকে মুক্তি পেতে এর নিবারণ করা অত্যন্ত জরুরী।

কুন্ডলীর দ্বাদশ ভাবে রাহুর উপস্থিতি অনুযায়ী প্রধানত দ্বাদশ প্রকার কালসর্প যোগ গঠিত হয়-
৪. অক্ষয়শ্রাব্ধ. কৈশিক ৩. স্বাস্থ্যক্ষয় ৭. তক্ষক ৮. ককোটক ৯. শংখচূড় ১০.
ঘাতক ১১. বিষধর ১২. শেযনাগ।

কালসর্প যোগ উদিত এবং অনুদিত দুই প্রকারের হয়। রাহুর সামনে/মুখে সমস্ত সাত গৃহ গৃহিত থাকলে তাহা উদিত গোলার্ধ যোগ তৈরী করে এবং রাহুর পশ্চাৎ দিক থেকে যদি সাত গৃহ স্থাপিত হয় তা অনুদিত গোলার্ধ নামক যোগ তৈরী করে। যদি রাহু ও কেতুর মধ্যে স্থিত গৃহে কিছু গৃহ রাহু-কেতুর অক্ষে সামান্য বাইরে থাকে তা আংশিক কালসর্প যোগ হিসাবে পরিগণিত হয়।

এই যোগে উৎপন্ন জাতক মানসিক অশান্তি, ধনপ্রাপ্তিতে বাধা, সন্তান জন্মে অবরোধ এবং গৃহস্থ জীবনের প্রতিমুহূর্তে অশান্তির সম্মুখীন হয়। জাতক প্রায়ই দুঃস্বপ্ন দেখে। কিছু না কিছু অশুভ ঘটনার আশঙ্কা মনের মধ্যে থাকে। নিজস্ব ক্ষমতা ও কার্য কুশলতার পূর্ণ ফল প্রাপ্ত করে না অথবা দেরীতে সফলতা প্রাপ্ত করে। এই যোগে হঠাৎ লোকসান বা প্রতিষ্ঠা হানির সম্মুখীন হয়। কালসর্প যোগের বিধিবেং উপচারের দ্বারা এরূপ কষ্ট থেকে মুক্তি পাওয়া সম্ভব।

জাতক পর কালসর্প যোগের প্রভাব

আপনার জন্মকুন্ডলীতে কালসর্পযোগ না থাকায় এটির জন্য শান্তি ইত্যাদির আবশ্যিকতা নেই এবং আপনি সম্পূর্ণ সুখী জীবনযাপন করবেন।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

- ॐ श्रीं पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में ॐ श्रीं और ॐ ड० के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ह्यनु ॐ कव

शुक्र

वृषराशिर अष्टमस्थाने रविर अवस्थाने दूर आपनार मध्ये ज्योतिषविद्यार एक अस्वाभाविक आग्रहेर उद्रेक हवे। ज्योतिषविद्यार्चर एवं गोपनसूत्रे आपनार आय हवे।

आपनार वृह मनस्ताद्विक एवं ज्योतिषविद्यार उपर नूतन धरनेर अभिज्ञता हवे एवं तारजन्य आपनि किछु किछु ज्योतिषशास्त्र चर्चर सङ्गे जड़ित, गोपन अनुष्ठानेर सङ्गे जड़ित हते पारनेर एवं आपनि प्रकृतिर रहस्य ओ अत्याश्चर्य दिक्गुलि आविष्कार करते पारनेर।

आपनि पूर्वपुरुषेर सम्पत्तिर मालिकाना पेटे पारनेर यार परिमान वेशी ना हलेओ एते आपनि सन्तुष्ट हवेन। यखन आपनार विवाह हवे आपनि पन पावेन किन्तु आपनि येहेतु वेशी परिमान आशा करेन ना तहै आपनार श्यालकरा आपनार कथामतन वेशी पन देवे ना।

आपनार वीमाराशि प्राप्तियोग आछे एवं एमनकि कोन मुतव्यक्तिर वीमाराशिओ पेटे पारनेर। आपनार जीवदशा स्वाभाविक हवे। आपनि खुब स्वन्नकाल रोगे भुगवेन एवं आपनार मृत्यु शीघ्र ओ आकस्मिक हवे।

आपनार जन्मेर समय सूर्य अष्टमस्थाने अवस्थान कराय आपनार पिता स्वास्थ्य खुब एकटा भाल यावे ना। तिनि आपनारके स्नेह करवेन एवं समस्त काजे आपनारके सहायता करवेन। तिनि आपनारके सठिक पथे चलना करार जन्य साहाय्य ओ समर्थन करवेन।

आपनि आपनार पिताके भक्ति करवेन एवं आपनारदेर मध्ये कदाचिं कोन अशान्तिर सृष्टि हवे। आपनि यत्नसहकारे आपनार पितार सेवा करवेन।

चन्द्र

धनुराशिर तृतीयस्थाने चन्द्रेर अवस्थानेर फले आपनि एकजन एमन जातक ये सहज जीवनयात्राय विश्वासी।

आपनि कानेर समस्याय कष्ट पावेन। आपनि हात, काँध एवं गलार हाडेर व्याथाय कष्ट पावेन।

आपनार जन्मेर समय चन्द्रेर तृतीयस्थाने अवस्थानेर दूर आपनार मा सुस्वास्थ्येर अधिकारीनि हवेन। तिनि आपनार प्रति भालवासा ओ स्नेहधारा अव्याहत राखवेन एवं प्रतोके स्फेद्रे आपनारके साहाय्य ओ समर्थन करवेन। आपनि शक्तिशाली ओ निर्भीक हवेन एवं आपनार मा आपनारके पुष्टिकर खाद्य दान करवेन।

आपनि आन्तरिकभावे आपनार माके सम्मान करवेन। तवे सामयिकभावे आपनारदेर मध्ये अशान्ति देखा दिते पारे। किन्तु एति अत्यन्त क्कनसह्यी हवे। आपनि आपनार माके आर्थिकभावे सहायता करवेन।

মঙ্গল

তুলালগ্ন যদিও আপনার জ্যোতিষশাস্ত্রের প্রতি আগ্রহের ইংগিত করে কিন্তু বৃষাশির অষ্টমস্থানে মঙ্গলের অবস্থানের ফলে এর বিপরীত ঘটনার ইংগিত করে ও মঙ্গলের প্রভাব শক্তিশালী হওয়ার ফলে আপনার জ্যোতিষশাস্ত্র চর্চার দিকে আগ্রহ জন্মাবে না। জ্যোতিষশাস্ত্র চর্চার প্রতি প্রথম দিকে আপনার আগ্রহ জন্মালেও পরবর্তী পর্যায়ে কোনও ভয়ঙ্কর অভিজ্ঞতার মাধ্যমে আপনি ধীরে ধীরে তার প্রতি আগ্রহ হারাবেন এবং পরে সম্পূর্ণ ত্যাগ করবেন।

আপনি কিছু সম্পত্তি অর্জন করবেন কিন্তু তার মূল্য এমন কিছু হবে না। বিয়ের সময় খুব সামান্য পন পাবেন যা আপনাকে সন্তুষ্ট করবে না। আপনাকে পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে যে আপনি বীমা করে রাখুন কারণ চুরি ও দুর্ঘটনার লক্ষণ রয়েছে। আপনার খুব জোরে ও বাজে ভাবে যানবাহন চালনার প্রবণতার জন্য আপনি দুর্ঘটনার সম্মুখীন হবেন।

আপনার জীবনকাল মধ্যবর্তী পর্যায় পর্যন্ত হবে। দুর্ঘটনা আপনার মৃত্যুর কারণ হতে পারে।

এই শিশুটির জন্ম সময়ে অষ্টম ঘরে মঙ্গলের অবস্থান তার ভাই বোনের সুস্থাস্থ্যের ইংগিত করে কিন্তু মাঝে মধ্যে তারা দৈহিক দুর্বলতা অনুভব করবে। তারা যতটা পারবে তাকে সাহায্য ও সহযোগীতা করবে। তারা তাদের হার জিত ভাগ করে নেবে।

সে তাদের ভালোবাসবে এবং মান্য করবে। কিছু মতভেদ ছাড়া তারা মিলেমিশে থাকবে, কিন্তু মতভেদের কারণে উদ্ভিগ্নতা বেশীক্ষণ স্থায়ী হবে না। দরকারে পরস্পরকে তারা সাহায্য করবে।

বুধ

বৃষাশির অষ্টমস্থানে বুধের উপস্থিতি জ্যোতিষশাস্ত্রের প্রতি আপনার আগ্রহ দেখায়। আপনি পুনর্জন্ম, মৃত্যু এবং মৃত্যুর পরবর্তী জীবন সম্বন্ধে সবিশেষ জ্ঞান এবং জ্যোতিষশাস্ত্র সম্বন্ধে বিশেষভাবে আকৃষ্ট হবেন। বুধ আপনাকে এই সমস্ত গোপন বিষয় জ্ঞানলাভের জন্য শক্তি যোগাবে।

মৃতব্যক্তির সম্পত্তি লাভের লক্ষণ রয়েছে। আপনি কোন বৃদ্ধ ব্যক্তির এবং পুরাতত্ত্বের দ্বারা সম্পত্তি লাভ করবেন। বৈজ্ঞানিক পর্যালোচনার সম্ভাবনা আছে। আপনি পন এবং বীমার দ্বারা লাভবান হতে পারেন।

এটা ঠিক যে আপনি বীমাশির দ্বারা লাভবান হবেন কিন্তু চুরি বা দুর্ঘটনার লক্ষণ নেই। আপনি দীর্ঘায়ু হবেন। আপনার জীবদ্দশায় শেষের দিকে চর্মরোগে ভুগতে পারেন।

বৃহস্পতি

কর্কটরাশির দশমস্থানে বৃহস্পতির অবস্থান আপনার পক্ষে অত্যন্ত সুখকর জীবনযাপনে সক্ষম করবে এবং এর প্রভাবে আপনি শূভফল লাভ করবেন। আপনি বুদ্ধিমান এবং কঠোর পরিশ্রমী, চতুরতার দ্বারা আপনি আপনার পেশায় আপনার মনিবকে সন্তুষ্ট করতে পারবেন এবং ক্রমাগত পদোন্নতিও করতে পারবেন। আপনার উদ্বৃত্তন ব্যক্তির আপনার কার্য করার দক্ষতার প্রশংসা করবেন। আপনি আপনার লেখনী বা অন্য কোন গুণাবলীর দ্বারা স্বীকৃতি পেতে পারেন।

আপনি আপনার পিতা এবং ভ্রাতাদের কাছ থেকে আর্থিক সাহায্য পাবেন, আপনার বন্ধু এবং উর্দ্ধতন সরকারী কর্মচারীরাও আপনাকে সাহায্য করবেন।

শুক্র

কর্কটরাশির দশমস্থানে শুক্রের উপস্থিতি আপনাকে দুটি বিপরীতধর্মী পরিস্থিতির মধ্যে ফেলতে পারে, এটা সম্পূর্ণ আপনার ওপরে নির্ভর করবে, আপনি আপনার জীবনে সফল হবেন বা বিফল হবেন। আপনি সমস্ত রকমের পার্থিব সুখ পেতে পারেন। যার ফলস্বরূপ আপনি আপনার পেশায় উন্নতির শিখরে পৌঁছবেন এবং প্রচুর অর্থ আয় করবেন। কিন্তু আপনি হঠাৎই যেকোন সময়ে আপনার বিপরীতধর্মী ভাগ্যের জন্য মানসিক আঘাত পাবেন, তার ফলস্বরূপ শীঘ্র পতনও হতে পারে। বীতশ্রদ্ধ হওয়ার দরুন আপনি বিপথগামী হয়ে আপনার মধ্যে খারাপ অভ্যাসগুলো বাড়িয়ে তুলতে পারেন। আপনাকে এই সমস্ত দূরবস্থা থেকে মোকাবিলার মনোভাব নিয়ে সমস্ত বাধাবিপত্তিকে পার করতে হবে।

শনি

বৃশ্চিকরাশির দ্বিতীয়স্থানে শনি আপনার গার্হস্থ্য বিজ্ঞানে আগ্রহের ইংগিত দেয়। আপনি ধনবান নন এবং গার্হস্থ্য জীবনে দুঃখ কষ্টের সম্ভাবনা আছে। কিছু জমি-সম্পত্তি আপনি লাভ করবেন, আপনি দীর্ঘায়ু। যেভাবেই হোক অর্থনৈতিক সমস্যা আপনার থাকবে। আপনার পরিবারের সদস্যদের সঙ্গে উত্তেজনাময় সম্পর্ক যেন না ঘটে সেদিকে সচেতন থাকুন।

রাহু

কন্যারাশির দ্বাদশস্থানে রাহুর অবস্থানের ফলে আপনি সঞ্চয়ে সক্ষম হবেন। আপনার প্রাথমিক ব্যয় কম হওয়ার ফলে আপনি টাকা জমাতে পারবেন। আপনি লাগাতার ধুমপায়ী হবেন এবং প্রচুর পয়সা ধূমপানের পেছনে যাবে। কখন কখন মদ্যপানের পেছনেও ব্যয় হতে পারে। মুখ্যতঃ ব্যয় নিজের জন্যই হবে।

দেশবিদেশের ভ্রমণের সম্ভাবনা থাকলেও লাভজনক হবে না। যদিও হয় তাহা শুধুই কাজ এবং আনন্দ একসাথে হবে।

কেতু

ষষ্ঠস্থানে কেতুর অবস্থান হেতু আপনার যকৃৎ ইত্যাদি জনিত সমস্যা হতে পারে। দুর্ঘটনাজনিত সামান্য আঘাতও পেতে পারেন। তাই আপনাকে অনুরোধ মদ্যপান এবং জোরে যানবাহন চালাবেন না।

আপনার বিপক্ষের লোকেরা আপনার মর্যাদাহানির চেষ্টা করবে। ফৌজদারী মোকদ্দমায় জড়িয়ে পড়ার সম্ভাবনাও আছে। তার জন্য আপনাকে চিন্তিত ও আর্থিক ক্ষতি বহন করতে হতে পারে।

দশা বিশ্লেষণ

মহাদশা :- শুক্র
(19/05/2016 - 19/05/2036)

আপনার জন্মকুন্ডলীতে শুক্রের মহাদশা আগামী ২০ বছরের জন্য ১৯/০৫/২০১৬ শুরু হবে এবং ১৯/০৫/২০৩৬ সমাপ্ত হবে।

আপনার জন্মকুন্ডলীতে শুক্র অষ্টম ভাবে অবস্থিত। শুক্র একটি শুভ গ্রহ, বৃষ ও তুলার অধিপতি। শুক্রের মূলত্রিকোণ রাশি তুলা এবং মীন রাশি উচচস্থান ও কন্যারাশি নিম্ন স্থান। শুক্র গ্রহ প্রেম, আনন্দ, ফ্যাশন, শিল্পকলা, বিবাহ ইত্যাদির দ্যোতক।

আপনার জন্মকুন্ডলীতে দশম ভাবে স্থিত শুক্র চতুর্থ ভাবের উপর দৃষ্টি দিয়ে এই ভাবকে প্রবলতা দান করছে। দশম ভাব সম্মান, প্রতিষ্ঠা, নাম ও যশ, সফলতা ও প্রতিষ্ঠা, খ্যাতি, লক্ষ্য, অধিকার, কর্তব্য, পদোন্নতি, আধুনিকতা, উচ্চ পদ ও রাজকীয় সম্মান এবং উরুর দ্যোতক।

স্বাস্থ্য :

মহাদশা স্বামী শুক্র দশমভাব স্থিত হয়ে জন্মকুন্ডলীর চতুর্থ ভাব, অর্থাৎ পরিবারের ভাব ও সুখ স্থান দেখছে। এর ফলস্বরূপ আপনি এই দশায় কোনো স্বাস্থ্য সমস্যা সম্মুখীন হবেন না। আপনি সকল প্রকার পারিবারিক আনন্দ লাভ করবেন।

অর্থ সম্পত্তি :

শুক্র জীবন-যাপন ও জীবিকার কারক দশম ভাবে স্থিত হওয়ায় আপনার চল-অচল সম্পত্তি লাভ হবে। আপনি নিজের জীবিকার ক্ষেত্রে সফল হবেন। শুক্র চতুর্থ ভাবে দৃষ্টির কারণে আপনার নতুন বাস-স্থান বা বাহন প্রাপ্ত হতে পারে। আপনি আপনার কর্ম ক্ষেত্রে সম্মান লাভ করবেন।

ব্যবসায় :

আপনি যেকোনো ব্যবসায় শুরু করবেন সফল হবেন। আপনি আপনার জীবিকা ক্ষেত্রে আদর সম্মান ও প্রতিষ্ঠা লাভ করবেন। আপনি সুখী, বুদ্ধিমান এবং উৎসাহপূর্ণ হবেন। ব্যবসা সূত্রে কিছু ভ্রমণ দ্বারা লাভ দেখা যায়। আপনার ভাই-বোনেরা আপনাকে সহযোগিতা করবে।

পারিবারিক জীবন :

আপনি ব্যবসায় বা চাকুরীতে অত্যন্ত ব্যস্ত থাকার কারণে আপনার জীবনসংগীকে তার প্রয়োজনীয় সময় ও সম্মান দানে অসমর্থ হবেন। এই কারণে আপনার পরিবারে বাধা ও বিচ্ছেদের সম্ভাবনা আছে যা আপনার পারিবারিক জীবন সম্পূর্ণরূপে বিনষ্ট করতে পারে।

অন্তর্দর্শা :- শুক্র - রাহু
(20/07/2023 - 19/07/2026)

শুক্র মহাদশা ২০ বছর। আপনার এই মহাদশা ১৯/০৫/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৫/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় রাহুর অন্তর্দর্শা ৩ বছর। আপনার এই অন্তর্দর্শা ২০/০৭/২০২৩ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৭/২০২৬ সমাপ্ত হবে।

রাহু আপনার জন্মপত্রিকায় দ্বাদশ ভাবে অবস্থিত। দ্বাদশ ভাব ক্ষতি, বাধা, অর্থের অসদুপযোগ, ধোকা, দান, পরিবারে বিচ্ছেদ, দুঃখ, গুপ্ত শত্রু, দুর্ঘটনা, গুপ্ত দুঃখ, শয়ন সুখ ও বিদেশে জীবনযাপনে সপ্তেক।

রাহু ছায়া গ্রহ। রাহুর কোনো রাশি ও কোনো রাশিতে আধিপত্য নেই। রাহু শুভ্রঅশুভ প্রভাব এর স্থিতি, ভাব ও রাশি অনুসারে হয়।

দ্বাদশ ভাব স্থিত রাহু আপনার কুন্ডলীর ষষ্ঠ ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্বকে প্রভাবিত করছে।

এই দশায় আপনি করুণাভাব দ্বারা ওতপ্রোত ও সকলের সাহায্যকারী হবেন। আপনি সংকার্যে ও গরীবদের প্রয়োজনে অর্থ ব্যয় করবেন। নিজের মানসিকতার খেয়াল রাখুন আত্ম প্রশংসা থেকে নিজেকে দূরে রাখুন আপনার প্রভূত আয় বৃদ্ধি হবে। এবং আপনি অত্যন্ত ধনবান হবেন। অর্থ ব্যয়ের সময় কিছু অপব্যয় হওয়ার সম্ভাবনা আছে। চোখের রোগে আক্রান্ত হতে পারেন।

অরিষ্ট দূরীকরণে রাহুর বৈদিক মন্ত্র ১৮০০০ জপ করুন।

অন্তর্দর্শা :- শুক্র - বৃহস্পতি
(19/07/2026 - 19/03/2029)

শুক্র মহাদশার ভোগ্যকাল ২০ বছর। আপনার জন্য এই মহাদশা ১৯/০৫/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৫/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। শুক্র মহাদশা বৃহস্পতির অন্তর্দর্শার ভোগ্যকাল ২ বছর ৮ মাস। আপনার এই অন্তর্দর্শা ১৯/০৭/২০২৬ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৩/২০২৯ সমাপ্ত হবে।

বৃহস্পতি আপনার জন্মপত্রিকায় দশম ভাবে স্থিত। দশম ভাব সম্মান, জনতা, রাজ্য, সফলতা, পদ-প্রতিষ্ঠা, সামাজিকতা, প্রায়োন্নতি, কর্মপ্রাপ্তি, ধার্মিক কার্য, সরকারী সম্মান ও উরুর পরিচায়ক।

বৃহস্পতি শুভ গ্রহ। দশম ভাবে স্থিত বৃহস্পতি আপনার কুন্ডলীর ২, ৪, ৬ ভাবে দৃষ্টিপাত দ্বারা কারকত্ব প্রভাব বিস্তার করছে।

এই দশাবধি আপনি উচ্চপদাসীন হতে পারেন। উত্তম ধনাগম হবে। ধার্মিক ও দৃঢ়সংকল্পী হবেন। বুদ্ধিমান, প্রসন্ন ও সিদ্ধান্তবাগীশ হবেন। বিদ্বান ব্যক্তিদের রক্ষা করবেন।

শুভ্র বৃদ্ধি ও অরিষ্ট ৫ রতি পীত পোখরাজ সোনার আংটিতে বৃহস্পতিবার প্রাতঃকালে পূজার পরে বৃহস্পতি মন্ত্র ৯৯ বার পাঠ করে ডান হাতের তর্জনীতে ধারণ করুন।

অন্তর্দর্শা :- শুক্র - শনি
(19/03/2029 - 19/05/2032)

শুক্র মহাদশা ২০ বছর। আপনার এই মহাদশা ১৯/০৫/২০১৬ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৫/২০৩৬ সমাপ্ত হবে। এই মহাদশায় শনির অন্তর্দর্শা ভোগ্যকাল ৩ বছর ২ মাস। আপনার এই অন্তর্দর্শা ১৯/০৩/২০২৯ আরম্ভ হয়ে ১৯/০৫/২০৩২ সমাপ্ত হবে।

শনি আপনার জন্মপত্রিকায় দ্বিতীয় ভাব অবস্থিত। দ্বিতীয় ভাব ভাগ্য, লাভ-ক্ষতি, সাংসারিক অভিজ্ঞতা, রত্ন, বাণী, ডান চোখ, উচ্চাকাঙ্ক্ষা, জিভ, দাঁত ও পরিবারের সদস্যদের পরিচায়ক।

এই দশায় আপনার আয় কম এবং কষ্ট বাড়তে পারে। অধিক পরিশ্রম করা সত্ত্বেও আমদানী কম হবে। আপনি কটু ভাষী হবেন, সমাজ থেকে দূরে থাকবেন। মুখে দুঃখের ভাব থাকবে, বিনা উদ্দেশ্যে এদিক-ওদিক ঘুরে বেড়াবেন। আপনি উন্নতির অনেক সুযোগ প্রাপ্ত করলেও লাভ ওঠাতে অসফল হবেন। পারিবারিক জীবনে দুঃখী হতে পারেন। আপনার ধাতু, খনিজ, ও শ্রমিক সম্বন্ধিত ব্যবসায় লাভ হবে।

অরিষ্ট দূরীকরণে ন-মুখী রত্নাক্ষর রূপে তৈরী করে ডান হাতের মধ্যমাতে শনিবার দিন শিবের প্রার্থনা ও শনি বৈদিক মন্ত্র জপের পরে ধারণ করুন।